# टेक्नोक्रेसी के खतरे

डॉ. अमन मदान

**एक समय था जब व्यक्ति के लिए यह मानना संभव था कि वह अपने समय का काफी ज्ञान समझ सकता या सकती है। आज यह नामुमकिन है। आज संस्थाओं का युग है, विशेषज्ञों की टीमों का युग है। इन टीमों को ज़्यादा खुला और परिणामों के प्रति ज़्यादा संवेदी बनाने की ज़रूरत है। बाहर के लोगों को इन पर दबाव डालने के नए तरीके भी सीखने होंगे।**

पिछले करीब सौ वर्षों में मानव समाज कई बुनियादी बदलावों का गवाह रहा है। ऐसी कई चीज़ें सामने आई हैं जिनकी इतिहास में कोई मिसाल नहीं है। ऐसी ही एक चीज़ है टेक्नोक्रेसी का उभार। हमारे जीवन का अधिकाधिक हिस्सा ऐसे विशेषज्ञों द्वारा नियंत्रित होता है, जिनके काम को हम समझ नहीं पाते।

हमारी सेहत, हमारा काम, यहां तक कि हमारी तफरीह भी तक्नीशियनों और ऐसी संस्थाओं के भरोसे है, जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। पेट में दर्द की शिकायत लेकर मैं किसी डॉक्टर के पास जाऊं, तो वह मुझसे ऐसे बात करेगा जैसे मैं कोई बच्चा हूं जिसे दुनिया के बारे में कुछ पता ही नहीं है। वह कुछ निर्देश लिखेगा जिन्हें मैं पढ़ नहीं पाऊंगा (हालांकि मैं अंग्रेज़ी पढ़ लेता हूं), मैं वह पर्ची लेकर दवा की दुकान पर जाऊंगा जहां दुकानदार मुझे कुछ गोलियां पकड़ा देगा जिनके नाम का उच्चारण भी मेरे लिए टेढ़ी खीर है। मैं चुपचाप घर जाकर बताए गए समय पर पानी के साथ गोलियां गटक लूंगा।

टेक्नोक्रेट्स का उदय आधुनिक समाज की ज़बर्दस्त जटिलता के साथ जुड़ा हुआ है। हमारी ज़िंदगी कई प्रक्रियाओं पर टिकी है और इनमें से हरेक प्रक्रिया के लिए ढेर सारे विशेषज्ञ  ज्ञान की ज़रूरत होती है।

एक समय था जब एक व्यक्ति के लिए यह मानना संभव था कि वह अपने समय का काफी ज्ञान समझ सकता या सकती है। आज यह नामुमकिन है। आज संस्थाओं का युग है, विशेषज्ञों की टीमों का युग है। ये लोग टीम के रूप में काम करते हुए कई समस्याओं पर काम करते हैं। राइट बंधुओं के लिए यह संभव था कि वे अपनी सायकिल की दुकान में काम करते हुए हवाई जहाज़ बनाकर उड़ा पाए थे। आज यह असंभव है। आज तो छोटी-छोटी हवाई जहाज़ कंपनियां भी एयरोनॉटिक्स, मेकेनिक्स, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रानिक्स, इंजिन वगैरह के विशेषज्ञों के हुनर का मिला-जुला उपयोग करती हैं। इसके लिए करोड़ों का बजट भी ज़रूरी होता है।

टेक्नोक्रेट्स एक खास किस्म की संस्था में काम करते हैं जो आधुनिक समाज का प्रमुख स्तंभ हैः नौकरशाही संगठन। सरकार और कंपनियां दोनों ही नौकरशाही व्यवस्था के रूप में संगठित हैं। ऐसे संगठनों में सत्ता का एक उद्देश्यपूर्ण उपयोग होता है, भूमिकाओं का विभाजन होता है तथा इनका संचालन सत्ता व अधिकार के एक सोपानबद्ध ढांचे के अंतर्गत किया जाता है और इनमें किसी भी स्थिति से निपटने के निहायत अवैयक्तिक तौर-तरीके होते हैं।

हमारे समय का सारा महत्वपूर्ण ज्ञान नौकरशाही के ढांचे में ही सीखा जाता है और उसका उपयोग भी नौकरशाही के तहत ही किया जाता है। हमारे लिए अत्यंत बुनियादी चीज़ें (जैसे बड़े-बड़े शहरों में लोगों को पानी पहुंचाना) मुहैया कराने वाले तकनीशियन तक ने अपने व्यवसाय के हुनर नौकरशाही से ओतप्रोत बड़े-बड़े शिक्षा संस्थानों में ही सीखे हैं।

सारी नौकरशाहियों में एक बात सामान्य होती हैः वे कई व्यक्तियों की ताकत को संकेंद्रित करती हैं और एक

आत्मविश्वास पूर्ण छवि प्रस्तुत करती हैं, चाहे उनके काम के नतीजों की हालत कुछ भी हों। टेक्नोक्रेट अपने वैज्ञानिक पराक्रम के बल पर काफी मुतमईन रहते हैं। उनका कहना होता है कि विज्ञान वास्तविक और तर्कसंगत है। जैसे, वे कहते हैं कि उनकी औषधियां सदा बुखार कम कर देती हैं और उनके बनाए ऑटोमोबाइल बटन दबाने पर हर बार चालू होते हैं। मगर हमें ज़ोरदार झटका तब लगता है जब हम यह देखते हैं कि दवा-प्रतिरोधी बीमारियों की संख्या बढ़ती चली जा रही है और उन्हीं ऑटोमोबाइल्स ने ग्लोबल वार्मिंग नामक दैत्य को जन्म दिया है।

एंथनी गिडन्स, उलरिच बेक व अन्य समाज वैज्ञानिक बता रहे हैं कि टेक्नोक्रेसियों में गुप्त ज़ोखिम होते हैं। टेक्नोक्रेट्स को न तो इन्हें पहचानना सिखाया गया है, न इनको संभालना। हमारा जीवन जिन वैज्ञानिक संस्थाओं पर आश्रित है, उनमें एक अंधा बिंदु विकसित हो चुका है। उनका पूरा ध्यान समस्याओं को सुलझाने पर था और वह काम उन्होंने काफी अच्छे से किया है। मगर वे अपने क्रियाकलापों के व्यापक प्रभाव नहीं देख पा रहे थे। यह सही है कि टेक्नोक्रेसियों ने हमें ज़्यादा लंबी, बेहतर व समृद्ध ज़िन्दगी का तोहफा दिया है मगर यह भी सच है कि हमारे ज़माने की कुछ सबसे बड़ी समस्याएं भी इन्हीं की देन हैं।

**हमारा जीवन जिन वैज्ञानिक संस्थाओं पर आश्रित है, उनमें एक अंधा बिंदु विकसित हो चुका है। उनका पूरा ध्यान समस्याओं को सुलझाने पर था और वह काम उन्होंने काफी अच्छे से किया है। मगर वे अपने क्रियाकलापों के व्यापक प्रभाव नहीं देख पा रहे थे।**

इंजिन और रेफ्रिजरेटर डिज़ाइन करते समय किसी ने ग्लोबल वार्मिंग जैसी चीज़ की कल्पना भी न की होगी। चेर्नोबिल परमाणु संयंत्र में विस्फोट से एक माह पहले एक युरोपीय पत्रिका ने इसे परमाणु सुरक्षा का प्रतिमान बताया था। और मौजूदा वित्तीय संकट से तत्काल पहले तक हमें यकीन दिलाया गया था कि ये सारी कंपनियां ठोस ज़मीन पर खड़ी हैं। अमेरिकी फौज को पूरा यकीन था कि वह सद्दाम हुसैन की 'समस्या' को चुटकियों में निपटा देगी। इराक का गैर-फौजी पक्ष उनकी दृष्टि का अंग ही नहीं था। टेक्नोक्रेसियां अपने आसपास दीवारें खड़ी करती हैं ताकि शंकालु और विरोधी तत्व बाहर ही रहें। मगर कभी-कभी ये दीवारें इतनी ऊंची हो जाती हैं कि पूरे समाज की भलाई खतरे में पड़ जाती है।

इसे लेकर कुछ लोगों की प्रतिक्रिया एकदम विपरीत दिशा में होती है और वे विज्ञान तथा सारी आधुनिक संस्थाओं को ही नकारने लगते हैं। मगर यह संभव नहीं लगता कि आयुर्वेद, होम्योपैथी और बैलगाड़ी उसी तरह की जीवन सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं, जैसी फिलहाल हमें उपलब्ध है। शुतुरमुर्ग की तरह आंखें चुरा लेने से विज्ञान व टेक्नोक्रेसी गुम नहीं होने वाले। हम कर यह सकते हैं कि इन्हें ज़्यादा खुला बनाएं और अपने परिणामों के प्रति ज़्यादा संवेदी बनाएं। वास्तव में यह विज्ञान के केंद्र में है: हमेशा सुधार के प्रति खुलापन और कभी यह न मानना कि हमारे पास अंतिम उत्तर है।

बदलाव वहां करना होगा जहां टेक्नोक्रेसी का निर्माण होता है; आधुनिक समाज का हृदय उसके शैक्षणिक व शोध संस्थान हैं। टेक्नोक्रेट्स को यह सिखाना होगा कि वे उन लोगों के साथ संवाद करें जो उनकी तरह नहीं सोचते, जिनके विचार उनसे अलग हैं। इस संवाद का मतलब यह नहीं होगा कि सिर्फ वैज्ञानिक बोलते रहें और बाकी दुनिया सुनती रहे। यह दो-तरफा प्रक्रिया होनी चाहिए। टेक्नोक्रेट्स को भी सुनना होगा कि लोग साइड प्रभावों और निर्भरताओं को लेकर क्या सोचते हैं और इस बारे में क्या सोचते हैं कि सुझाए गए उपाय के बगैर भी कैसे काम चलाया जा सकता है। एक समस्या यह रही है कि तकनीशियनों को मात्र तकनीकी मामलों की शिक्षा मिली है, वे मानवीय सरोकारों के बारे में पूरी तरह अनभिज्ञ होते हैं। वे सिविल इंजीनियरिंग या चिकित्सा विज्ञान तो पढ़ते हैं मगर इस बात का अध्ययन शायद ही करते हों कि लोग कैसे जीते हैं, कैसे मुहब्बत करते हैं। तकनीशियन के दायरे में अर्थ शास्त्र भी सिर्फ हिसाब-

किताब, बही-खाते और वित्त व्यवस्था के रूप में आता है, गरीबी और वंचनाओं के रूप में नहीं। हमने जो टेक्नोक्रेसी निर्मित की है वह एकतरफा संवाद पर निर्भर है। अब वक्त आ गया है कि इसे एक सोचने-समझने वाली और दो-तरफा संवाद आधारित संस्था का रूप दिया जाए।

सत्ता को लेकर रवैये में बदलाव की ज़रूरत है। नौकरशाही और टेक्नोशाही में सत्ता के प्रति विशेष प्रेम होता है। युवा नौसिखिए सीखते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने का तरीका यह है कि सत्ता के सामने सिर झुकाओ और उसके साथ तैरो। इस तरह की प्रवृत्ति युवाओं को प्रोत्साहित नहीं करती कि वे बेकार चीज़ों को पहचान पाएं और सत्य के लिए उठ खड़े हों। शिक्षा संस्थाओं में बच्चे सीखते हैं कि खरी बातें कहने और दिए गए उत्तरों पर सवाल उठाने से वे खुद के लिए ही मुसीबत पैदा कर सकते हैं। मगर सच्चाई यह है कि एक आलोचनात्मक रवैया और स्वस्थ शंकालुता टेक्नोक्रेसी के ज़ोखिम को कम करने के सबसे कारगर औज़ार हैं। हमें ऐसे रवैये की भी बहुत ज़रूरत है जो राजा को बता सके कि वह नंगा है। तकनीकी शिक्षा के तौर-तरीकों में परिवर्तन हमारे अजेंडा में होना चाहिए।

और अंततः, टेक्नोक्रेसी से बाहर के लोगों को भी उन पर दबाव डालने के नए तरीके सीखने होंगे। संगठित उपभोक्ता फीडबैक और खतरनाक वस्तुओं का बहिष्कार एक तरीका हो सकता है जिससे टेक्नोक्रेट्स को ध्यान देने को विवश किया जा सकता है। मगर समाज के स्तर पर देखें तो आम शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो सबको ऐसे हुनर प्रदान करे कि लोग विशेषज्ञों द्वारा सुझाए गए नुस्खों को समझ सकें और उन पर टिप्पणी कर सकें। परमाणु शक्ति की ओर बढ़ते देश में यदि जोखिम की समझ रखने वाले मुट्ठी भर लोग ही हैं, तो यह संकट को न्यौता है। यह उम्मीद करना बेमानी होगा कि जिस व्यक्ति का कैरीयर परमाणु टेक्नॉलॉजी से जुड़ा है, वह इसके बारे में एक संतुलित नज़रिया रख पाएगा। एक बेहतर आम शिक्षा ही टेक्नोक्रेसी के खतरों के विरुद्ध सुरक्षा की गारंटी का अनिवार्य घटक होगी। ***(स्रोत फीचर्स)***


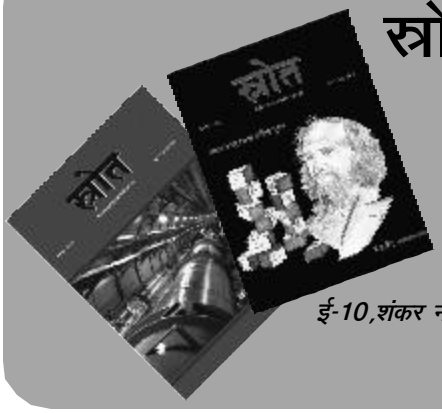


# स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

*वार्षिक सदस्यता*

*सिर्फ 150 रुपए*

**सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल**

**के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से**

***ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016***

**के पते पर भेजें।**